**ओ३म्**

**“वेद के विद्वानों को मोक्ष देने वाला ईश्वर हम सब मनुष्यों**

**का सर्व प्रमुख गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

ईश्वर संसार का रचयिता, पालक एवं प्रलयकर्ता है। वह सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। सभी मनुष्यों की उपासना का पात्र केवल और केवल वही एक परमात्मा है। अन्य इतर मनुष्य व विद्वान ईश्वर की तुलना में उपासना, भक्ति व प्रार्थना आदि की दृष्टि से हेय व उसके बाद व उससे बहुत दूर हैं। ईश्वर का अवतार कभी नहीं होता और न कोई एक व्यक्ति उसका एकमात्र पुन व सन्देशवाहक ही होता है। महर्षि दयानन्द जी ने जो कार्य किया उसके आधार पर वही ईश्वर के सच्चे पुत्र और सन्देशवाहक सिद्ध होते हैं। उनसे पूर्व उत्पन्न सभी वैदिक ऋषि भी उन्हीं के अनुरूप थे। यह भी जानने योग्य है कि ईश्वर, जीवात्मा और मूल प्रकृति अनादि व नित्य सत्तयायें है और तीनों ही अविनाशी और अमर हैं। जीवात्मा सत्य चित्त तो है परन्तु आनन्दस्वरूप न होकर आनन्द से रहित है और आनन्द की अपेक्षा व अभिलाषा रखता है जिसकी पूर्ति सर्वाधिक रूप से ईश्वर के सान्निध्य, उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित उसकी वेदों में दी गई आज्ञा के पालन करने से मिलती है। ईश्वर के बनायें अनेक भौतिक पदार्थों के भोग से भी मनुष्य को अस्थाई व क्षणिक सुख की प्राप्ति होती है परन्तु इनका परिणाम दुःख मिश्रित होने से जन्म जन्मान्तरों में जीवात्मा की उन्नति न होकर पतन ही प्रायः होता है। अतः वर्तमान व भविष्य, इस जन्म व परजन्मों में सुख व आनन्द की उपलब्धि की प्राप्ति के लिए मनुष्यों को ईश्वर के सच्चे सवरूप का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। ऐसा करके और वेदानुकूल ईश्वर सन्ध्योपासना करके ही मनुष्य अपने जीवन को सफल व सुखी कर सकता है। ऋषि दयानन्द का सारा परिश्रम इसी बात के लिए था। उनसे पूर्व ईश्वर, जीवात्मा, सन्ध्या, उपासना आदि विषयों के यथार्थ उत्तर उपलब्ध नहीं होते थे और अल्पज्ञानी व अज्ञानी लोगों को इसका बोध भी नहीं था परन्तु आज वेद, वैदिक साहित्य और ऋषि दयानन्द की कृपा से ईश्वर व सृष्टि सहित जीवात्मा, मनुष्य जीवन का लक्ष्य व उसकी प्राप्ति के साधन, अभ्युदय व निःश्रेयस की सिद्धि जैसे सभी विषयों के उत्तर, समाधान एवं यथार्थ ज्ञान उपलब्ध एवं प्राप्य है। जो मनुष्य इनको जानने व प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करता वह मनुष्य नाम को सार्थक नहीं करता क्योंकि मनुष्य का अर्थ ही मनन करना और इन प्रश्नों पर विचार कर उनका यथार्थ समाधान जानकर सही साधन अपनाकर अभ्युदय व निःश्रेष्य की सिद्धि प्राप्त करना ही है।

 ईश्वर से हमारे एक सनातन नित्य मित्र, स्वामी-सेवक, उपास्य-उपासक, पिता-माता आदि अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं। महर्षि दयानन्द ने संस्कारविधि में ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना के आठ मन्त्रों का विधान कर उनकी आर्य भाषा हिन्दी में सरल व सुबोध व्याख्या की है। सातवें मन्त्र में वह कहते हैं कि वह ईश्वर अपना अर्थात् हमारा सबका गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें। परमात्मा के लिए वह मन्त्रार्थ के आरम्भ में लिखते हैं कि हे मनुष्यों ! वह परमात्मा अपने लोगों को भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करनेहारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है, और जिस सांसारिक सुख-दुख से रहित, नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप, धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वच्छे पूर्व विचरते हैं। आर्यसमाज के विद्वानों व स्वाध्याय की प्रवृत्ति वालों के लिए यह बातें सामान्य हैं परन्तु अन्यों के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और हम समझते हैं उन्हें इस पर एक दृष्टि डालने सहित गम्भीरता से विचार करना चाहिये जिससे उन्हें भूरिशः लाभ हो सकता है। हम यह भी मानते व समझते हैं कि यदि एक सामान्य मनुष्य, भले ही वह किसी भी मत व मतान्तर का मानने वाला अनुयायी क्यों न हो, यदि वह उसका अर्थ सहित प्रतिदिन व दिन में अनेक बार पाठ करने के साथ मन्त्र के पदों व अर्थों पर विचार कर उसका जीवन में पालन करता है, तो वह इस एक मन्त्र के ही पाठ, जप, विचार-चिन्तन व अर्थों के ध्यान से अपने इस जीवन व भावी जन्मों को भी उन्नत कर सकता है। यह एक ही मन्त्र नहीं अपितु वेद ऐसे उत्तमोत्तम मन्त्रों से भरा पड़ा है। वेदाध्ययन ही मनुष्यों को सभी सत्य विद्याओं जिनमें अध्यात्म विद्या सहित जीवन जीने की विशेष कला के दर्शन होते हैं, ऐसे अनेक महत्वपूर्ण विचारों व जानकारियों से भरा पड़ा है जिसका अध्ययन अध्येता को विशेष सुख, मानसिक एवं आत्मिक शान्ति प्रदान करता है। अतः कल्याण व जीवन में सुख-शान्ति के अभिलाषी प्रत्येक मनुष्य, परिवार, समाज व मत-मतान्तर के अनुयायी को अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर वेदाध्ययन व उसका आचरण करना चाहिये। हमने जिस मन्त्र की चर्चा की है वह यजुर्वेद के 32 वें अध्याय का 10 वां मन्त्र है। मन्त्र है **‘ओ३म स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।’**

इस मन्त्र की अनेक बातें ध्याता व मन्त्रपाठ करने वालों को आकर्षित करती हैं। एक तो यह कि ईश्वर हमारे सब कामों व इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। शास्त्र, तर्क व युक्ति आदि प्रमाणों से यह बातें सत्य सिद्ध होती हैं। संसार के सभी लोकों की सूक्ष्म व सभी गुप्त बातों को भी ईश्वर जानता है। वह इस अनन्त ब्रह्माण्ड के सभी लोकों व उनके सभी नामों, स्थानों उत्पत्ति वा जन्मों आदि को व्यापक व विस्तृत रूप से जानता है। हमारा वह ईश्वर हमें धर्मिष्ठ भ्राता के समान सुखदायक है। राम के अपने भाईयों व प्रजा से जिस प्रकार के मधुर सम्बन्ध थे व वह एक दूसरे के प्रति सुखदायक थे, उनसे भी अधिक ईश्वर हमारे लिए सुखदायक है। मन्त्र में ऋषि दयानन्द ने **‘जनिता’** शब्द का अर्थ सकल जगत् का उत्पादक बताया है। जिस बात को आज के वैज्ञानिक न जानते हैं और न मान ही पा रहे हैं, उसका उत्तर देते हुए ऋषि दयानन्द व वेद बताता है कि इस सकल संसार, ब्रह्माण्ड व विश्व का उत्पादक, उसको रचने वाला एक परमेश्वर ही है। यह अपौरुषेय रचना है जिसे ईश्वर के अतिरिक्त कोई उत्पन्न नहीं कर सकता और न ही यह सृष्टि स्वतः बन सकती है। हमें लगता है कि वैज्ञानिकों व विज्ञान को अन्त में वेद व ऋषियों की इस सत्योक्ति को स्वीकार करना ही पड़ेगा। कुछ मत व सम्प्रदाय आदि इस संसार को ईश्वर से रचा हुआ ही मानते हैं परन्तु उनके ईश्वर के स्वरूप विषयक जो सिद्धान्त व विचार हैं, वह पूर्णतः अवैज्ञानिक एवं बुद्धिसंगत न होने के कारण साधारण मनुष्य को भी स्वीकार करने के लिए प्रेरित नहीं करते। वैज्ञानिक भी प्रायः वेद निहित ईश्वर के स्वरूप व सृष्टि की उत्पत्ति विषयक आर्यसमाज के सिद्धान्तों व विचारों से अनभिज्ञ हैं। आर्यसमाज के संगठन व इसके विद्वानों की भी कुछ सीमायें वा कमियां है कि वह वैज्ञानिक को सन्तुष्ट करने वाली युक्तियों, विचारों, मान्यताओं, सिद्धान्तों व तर्कों पर आधारित आंग्ल भाषा का कोई प्रमाणिक ग्रन्थ लिखकर उसका यथोचित मात्रा में प्रचार नहीं कर सके। हम भाग्यशाली हैं कि हम इस सिद्धान्त को गहराई से जानते हैं, इससे पूर्णतः सन्तुष्ट हैं और हमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने का पूरा लाभ भी प्राप्त है। इस महनीय देन के लिए ऋषि दयानन्द हम वैदिक धर्मियों के कोटिशः धन्यवाद के अधिकारी हैं। मन्त्र में एक शब्द **‘विश्वा’** आया है जिसका ऋषि ने अर्थ करते हुए लिखा है कि ईश्वर सभी जीवात्माओं व मनुष्यों के सभी कामों का पूर्ण करनेहारा है। ईश्वर हमारे लिए जो शुभ व अशुभ है उन सबको भली प्रकार जानता है व शुभ ज्ञान व पदार्थों को हमें प्रदान भी कराता है। यह भी वैदिक धर्म व ऋषि दयानन्द की बहुत बड़ी देन है। शायद विगत पांच हजार वर्षों में किसी आचार्य ने हिन्दी भाषा में विधाता का इतना विवेक एवं महत्वपूर्ण अर्थ नहीं किया। इसे एक शब्द व अर्थ से ही हम सबके लिए ईश्वर की उपासना करना सिद्ध होता है।

मन्त्र में आये पदों यत्र, तृतीये धामन्, अमृतम्, आनशानाः देवाः व अध्यैरयन्त का अर्थ वा व्याख्या करते हुए ऋषि दयानन्द बताते हैं कि ईश्वर सांसारिक सुख व दुःख से रहित है। वह नित्य अर्थात् सदा-सर्वदा आनन्द से युक्त है, वह मोक्ष अर्थात् सभी प्रकार के दुःखों से पूर्णतया रहित है, उस परमात्मा की दया व कृपा से वेदाध्ययन, वेदों का स्वाध्याय व वेदाचरण करने वाले विद्वान, योगी व ऋषि आदि मोक्ष को प्राप्त कर स्वेच्छा व स्वतन्त्रता पूर्वक सर्वव्यापक ईश्वर व इस समस्त ब्रह्माण्ड में सभी स्थानों पर विचरते हैं। इन सब कारणों से ऋषि दयानन्द कहते हैं कि ऐसा परमात्मा ही हमारा गुरु, आचार्य, राजा व न्यायाधीश है और हमें उसी की, अन्य व अन्यों की नहीं, भक्ति ध्यान व उपासनापूर्वक करनी चाहिये। हमें अनुमान होता है कि ईश्वर की उपासना के पक्ष में इससे सशक्त प्रमाण व तर्क नहीं हो सकते।

हम जब वेद मन्त्रों को उनके सभी शब्दों का अर्थ जानकर व ऋषि व विद्वानों के सुसंगत अर्थों को पढ़ते हैं, उन पर विचार करते हैं तो हमें उनमें निहित गम्भीर रहस्यों का ज्ञान होता है और हमारे मन व आत्मा में ईश्वर के ध्यान, भक्ति व उपासना के प्रति लगन, भावना, प्रेरणा व उत्कण्ठा उत्पन्न होती है और हम एक सच्चे साधक बनते हैं। ऋषि दयानन्द सर्वोच्च कोटि के उपासक, साधक व योगी थे। उन्होंने ईश्वर का प्रत्यक्ष वा साक्षात्कार भी किया हुआ था। जो सही विधि से जितनी साधना करेगा, आसी मात्रा में उसको सफलता मिलती है। हम कम साधना करते हैं तो हमें लाभ भी कम ही होगा। शीषर्पस्थ कोटि के उपासक होने के कारण ऋषि दयानन्द ईश्वर की इतनी सुन्दर, सुस्पष्ट, सारगर्भित, स्पष्ट तथा आत्मा को सन्तुष्ट एवं प्रेरित करने वाली व्याख्या कर सके। सारा संसार उनका ऋणी है। दुःख है कि मत-मतान्तरों के अविद्या से ग्रस्त आचार्यों ने ऋषि दयानन्द के सत्य विचारों को अपने अनुयायियों तक पहुंचने नहीं दिया। संसार की सभी समस्याओं का मूल कारण भी अविद्या व अविद्यायुक्त मत-मतान्तर ही हैं। वेद ही इनकी परमौषध है। ऋषि ने इस परमौषध से ही देश व संसार के रोगों को दूर करने का प्रयास किया था, जिसके वह सर्वथा योग्य थे और जिसमें सभी मत-मतान्तर बाधक सिद्ध हुए। आज के पढ़े लिखे ज्ञानी व विद्वान कहे जाने वाले लोग नाना प्रकार की पोथियों को पढ़ते हैं परन्तु वह ईश्वर व समाज विषयक यथार्थ ज्ञान **‘विवेक’** से कोषों दूर हैं। इसका समाधान वेद और महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ही हो सकता है। सत्यार्थप्रकाश का प्रचार व उसकी शिक्षाओं का समग्रता से ग्रहण ही संसार की अशान्ति को दूर कर मनुष्य को अभ्युदय व निःश्रेयस प्राप्त करा सकता है। हम सबको वेद वर्णित ईश्वर को ही अपना गुरु, आचार्य, राजा व न्यायाधीश मानना चाहिये और ऋषि दयानन्द की **‘मनुष्य’** विषयक परिभाषा को अपने जीवन में सार्थक करना चाहिये। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘ईश्वर और ऋषि भक्त आर्य पिता के पुत्र नेत्र शल्य चिकित्सक डा. दिनेश शर्मा एवं सभी मित्रों का हार्दिक धन्यवाद’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

बृहस्पतिवार 6 अप्रैल, 2017 को मैंने अपनी बाईं आंख का मोतियाबिन्द का लैजर तकनीकी से आपरेशन कराया है। इसी कारण मैं इस बीच कोई लेख आदि प्रस्तुत नहीं कर सका। अब मुझे कुछ कुछ कार्य करने की अनुमति मिल गई है। अतः आपकी सेवा में आपकी शुभकामनाओं के लिए कृतज्ञता एवं धन्यवाद करने के लिए उपस्थित हुआ हूं। आप सभी मित्रों का हार्दिक धन्यवाद है।

 देहरादून में नेत्र चिकित्सा का एक प्रमुख केन्द्र ‘अमृतसर नेत्र चिकित्सालय (एईसी)’ है जिसके संचालक प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा. दिनेश शर्मा है। आप अमृतसर के आर्य विद्वान श्री द्वारिका दत्त शर्मा के सुयोग्य पुत्र है। आपसे ज्ञात हुआ कि आप अमृतसर के लारेंसों रोड आर्यसमाज से जुड़े रहे हैं। श्री द्वारिका दत्त जी को आर्यसमाज ने मारीशस जाकर प्रचार करने का प्रस्ताव किया था जिसे वह स्वीकार नही कर सके थे। आप सुस्कृत व हिन्दी के विद्वान बताये जाते हैं और जीवन में शिक्षा जगत से जुड़े रहे। श्री द्वारिका दत्त शर्मा जी एक अच्छे हिन्दी कवि भी रहे हैं। देहरादून के आर्य विद्वान श्री प्रा. अनूप सिह जी का आपसे निकट परिचय था। 20-25 वर्ष पूर्व दोनों परस्पर मिलते रहते थे और इसकी जानकारी श्री अनूप सिंह जी हमें देते रहते थे। श्री द्वारिका दत्त शर्मा जी अब इस संसार में नहीं हैं। हमें डा. दिनेश शर्मा से चार बार भेंट करने का अवसर मिला। हमने पाया कि व्यवहार में आर्यत्व के गुण आपको विरासत में मिले हैं और सम्भवतः यही कारण है कि पूरे उत्तराखण्ड में आपका नेत्र चिकित्सालय विश्वसीय एवं सुप्रसिद्ध है, सफलता के नये नये आयाम जोड़ रहा है, एक माह में 300 से 350 मोतियाबिन्द के आपरेशन होते है, अन्य नेत्ररोगियों का भी पूर्ण सन्तुष्टि से उपचार हो रहा है तथा सभी सरकारी विभागों द्वारा अपने अपने कर्मचारियों व अधिकारियों की नेत्र चिकित्वा के लिए एईसी मान्यताप्राप्त है। हमने अपनी दूसरी भेंट में डा. दिनेश शर्मा जी को सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति भेंट की जिसे उन्होंने बहुत प्रेम, सौहार्द एवं विनम्रता से स्वीकार की। आपरेशन के बाद धन्यवाद करने पर आपने कहा कि मैं तो आपकी तरह ही एक साधरण व्यक्ति हूं।

8 अप्रैल, 2017 को अमृतसर आई क्लिनिक के 30 वर्ष पूरे हुए। इस दिन देहरादून के एक चार सितारा होटल में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में उत्तराखण्ड राज्य के एक कैबिनेट मंत्री श्री यशपाल आर्य, विधायक श्री उमेश शर्मा, जस्टिस बी.सी. काण्डपाल, पूर्व आयकर आयुक्त, मुम्बई श्री जोशी आदि अनेक प्रसिद्ध डाक्टर एवं गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। डा. दिनेश शर्मा जी ने हमें आर्यसमाजी होने के कारण ही इस भव्य आयोजन में आमंत्रित किया जिससे हम इसके साक्षी बन सके। आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल जी ने भी हमारे ही साथ 6 अप्रैल, 2017 को अपनी बाईं आंख का मोतियाबिन्द का आपरेशन कराया। आप भी इस समारोह में आमंत्रित थे और हम दोनों मित्रों ने साथ साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया।

 यह भी बता दें कि अमृतसर आई क्लिनिक एक ऐसा आधुनिक नेत्र चिकित्सा केन्द्र हैं जहां विश्वस्तरीय सभी आधुनिक सुविधायें उपलब्ध हैं। संसार के उन्नत देशों में नेत्र चिकित्सा की जो आधुनिक सुविधायें सम्प्रति उपलब्ध हैं वह सभी देहरादून के अमृतसर आई क्लिनिक में उपलब्ध है। इसे हम देहरादून सहित सभी देशवासियों के लिए एक वरदान ही कह सकते हैं कि सभी विश्वस्तरीय सुविधायें यहां उपलब्ध है और वह भी एक ऋषि व आर्यसमाज भक्त पिता की सन्तान डा. दिनेश शर्मा जी द्वारा। यह भी बता दें कि डा. दिनेश शर्मा सप्ताह में एक दिन निर्धन लोगों को निःशुल्क देखते हैं। निर्धनों से मात्र एक हजार रूपये आपरेशन के लिए जाते हैं। यदि कोई यह भी देने की स्थिति में न हो तो उसका निःशुल्क उपचार व आपरेशन किया जाता है। आपने देहरादून के निकटवर्ती स्थानों ज्वालापुर एवं विकासनगर में भी अपने केन्द्र खोले हुए हैं। डा. दिनेश शर्मा जी ने अपने पिता श्री द्वारिका दत्त शर्मा जी के नाम पर एक धर्मार्थ न्यास 8 अप्रैल, 2017 को स्थापित किया है जिसके अन्तर्गत समस्त उत्तराखण्ड के दूरस्थ व दुर्गम स्थानों में एक वैन में डाक्टर एवं सहायक स्टाफ की टीम भेज कर नेत्र रोगियों का निःशुल्क उपचार किया जायेगा। हमें लगता है कि यह परोपकार के कार्य उन्हें कहीं न कहीं अपने पिता के आर्य व वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारों, आर्यसमाज व यज्ञ आदि से ही मिले हैं। आगामी दिनों में हम डा. शर्मा का एक साक्षात्कार लेकर उनके पिता आदि के बारे में आर्यसमाज से जुड़ी किंचित विस्तृत जानकारी एक लेख के माध्यम से देना चाहते हैं।

Brief Introduction of DR. DINESH SHARMA (M.B.B.S., M.S.)

Dr. Dinesh Sharma completed his M.B.B.S. in 1978 and M.S. in 1981 from the Government Medical College, Amritsar. He worked with the Punjab Medical Services for 5 years and later migrated to Dehradun where he established Amritsar Eye Clinic in 1987. He is an accredited cataract surgeon. Operating cataracts with lens implants since 1983, he is one of the pioneers in this field. Till date, Dr. Dinesh Sharma has performed more than 45000 cataract extractions. Under his leadership, refractive surgeries are being successfully performed at A.E.C. since 1999. Associated with many charitable institutions throughout his career, he has operated thousands of patients free of cost even at faraway places like Varanasi.

He has presented a number a research papers in Europe and Southeast Asia on Micro-Incision Cataract Surgery (MICS) and refractive procedures. Dr. Dinesh Sharma is an accredited surgeon for blade-free femtosecond laser cataract surgery, amongst a handful of those in the country. With years of experience in so many super-specialities of ophthalmology, Dr. Dinesh Sharma handles a large variety of cases not only in the out-patient department but also in the operation theatre.

हम इस अवसर पर डा. दिनेश शर्मा जी को हमारी आंख का सफल आपरेशन करने के लिए हार्दिक धन्यवाद सहित अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं और उनके समस्त परिवार के लिए अपनी शुभकामनायें एवं साधुवाद व्यक्त करते हैं।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**